प्रातःक्लास 24/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। जिन बच्चों ने गीता का अभ्यास किया है अच्छी तरह से, वह हाथ उठावें। अभी उसमें लिखा हुआ है श्री कृष्ण भगवानुवाचः पहले–2 तो यह मुख्य प्वाइन्ट्स है। बच्चे जातने हैं भारत सद्गति को पाया हुआ था। कौन सी सद्गति? यह (ल.ना.) चित्र है ना। बच्चे जानते हैं आज से 5000 वर्ष पहले जब सतयुग था भारत में, तो इन ल.ना. का राज्य था। अभी है कलयुग। जब भारत में इनका राज्य था तो और कोई धर्म नहीं था। आज से 5000 वर्ष पहले सूर्यवंशी का राज्य था। फिर चन्द्रवंशियों का राज्य हुआ। भारत यही देवी–देवताओं का राजस्थान था। और कोई राज्य नहीं थी। यह पढ़ाई है, भक्ति नहीं। भक्ति में पढ़ाई नहीं होती। पढ़ाई ज्ञान में होती है। यज्ञ, तप, दान, पुण्य आदि करना भक्ति है। बहुत भक्ति करते आते हैं। फिर भगवान को आना पड़ता है, भक्ति का फल देने। भक्ति पूरी होती है, कलयुग अंत में। अर्थात् जब पुरानी दुनियाँ का अंत होता है। फिर भगवान आकर नई दुनियाँ की स्थापना और पुरानी दुनियाँ का विनाश कर देते हैं। यह तो बच्चे समझते हैं, बरोबर जब आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना होती है तो दूसरा कोई धर्म होता ही नहीं। अभी तो अनेक धर्म हैं। आदि सनातन देवी–देवता धर्म है नहीं। सिर्फ़ चित्र हैं। यह है सच्ची गीता। गीता जो भक्ति मार्ग में पढ़ते आए हैं वह तो जानते हैं श्री कृष्णुवाच नहीं है। नहीं है। यह है भगवानुवाचः। अभी भगवान किसको कहा जाता है? भगवान कितने हैं? यहाँ तो कोई कहते हैं, ईश्वर एक है कोई कहते हैं 24 अवतार लेते हैं। कच्छ अवतार, मच्छ अवतार। तो गोया वह कच्छ–मच्छ का बच्चा भी हुआ। यह तो गालियाँ देते हैं ना। बाप समझाते हैं मुझे गालियाँ देते हो। कौन कहते है? शिव भगवानुवाचः। सर्व की सद्गति दाता यह शिवबाबा ही है। वह खुद समझाते हैं मीठे–2 बच्चों अपन को आत्मा समझो। शरीर नहीं समझो। भक्ति मार्ग में वा रावण राज्य में तुम अपन को शरीर समझते आए हो। इसको कहा जाता है देह–अभिमान। बाप समझाते हैं देह–अभिमानी बनने से तुम नर्कवासी बनते हो। मैं फिर आकर तुमको देही–अभिमानी बनाता हूँ। अपन को आत्मा समझो। आत्मा अविनाशी है। वह एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। तो यह पढ़ाई है। यह कोई वह सतसंग नहीं। वह तो सभी झूठे सतसंग तुम जन्म–जन्मांतर करते आए हो। पहले–2 तो श्रीमद्भगवद्गीता जो है उनको खण्डन कर दिया है। वास्तव में होना चाहिए भगवानुवाचः। ऊँच ते ऊँच भगवान वह निराकार परमपिता परमात्मा शिव ही है। कृष्ण को परमपिता नहीं कहेंगे। परमपिता है ही एक निराकार भगवान। यह भी बाप ने समझाया है, दो बाप होते हैं। एक लौकिक और पारलौकिक। एक से हद का वर्सा मिलता है दूसरे से बेहद का वर्सा मिलता है। लौकिक बाप को परमपिता नहीं कहेंगे। परम कहा जाता है सुप्रीम को। ऊँच ते ऊँच भगवान। बाप कहते हैं, मैं एक ही बार आता हूँ पतित दुनियाँ को नई दुनियाँ बनाने। यह है बाप का अलौकिक कर्तव्य, जो और कोई कर न सके। बाप बैठ बतलाते हैं गीता में यह बड़ी ते बड़ी भूल कर दी है जिससे ही भारतवासी नर्कवासी बने हैं। बाप तुम बच्चों को अभूल बनाते हैं। जिससे तुम फिर स्वर्ग़वासी बनते हो। आज से 5000 वर्ष पहले इन (ल.ना.) सूर्यवंशियों का राज्य था। फिर चन्द्रवंशी राज्य हुआ। स्वर्ग़ सतयुग को कहा जाता है। त्रेता को कहेंगे सेमी स्वर्ग़ अथवा रामराज्य; क्योंकि दो कला कम जाती है ना। तो यह पढ़ाई है। जो और कोई पढ़ा न सके। न वेदों–शास्त्रों में ही यह पढ़ाई है। बाप समझाते हैं वह सभी है भक्ति मार्ग। ज्ञान मार्ग को दिन (सतयुग)–त्रेता कहा जाता है। भक्ति मार्ग है द्वापर–कलयुग। भक्ति के अंधियारे रात में धक्के खाते हैं। द्वापर कलयुग है (वो) अंधियारा मार्ग। किसका अंधियारा? प्रजापिता ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणों की रात। फिर प्रजापिता ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणों का दिन है, सतयुग–त्रेता। दिन को स्वर्ग़ कहा जाता है, फिर है सेमी स्वर्ग़; क्योंकि दो कला कम हो जाती है। फिर द्वापर में रावण राज्य शुरू होता है। रावण कौन है यह भी किसको पता नहीं। रावण का (बुत) बनाकर जलाते हैं, ज़रूर दुश्मन है। दुश्मन का ही बुत बनाकर आग लगाते हैं ना। मनुष्यों को यह भी पता (नहीं) है। तुम जानते हो पहले–2 प्रवृत्ति मार्ग था। फिर वह 84 जन्म लेते–2 नीचे आए हैं। जो सूर्यवंशी थे उन्होंने ही .....

(पु)नर्जन्म लिया। सूर्यवंशी इतने जन्म फिर चन्द्रवंशी इतने जन्म। बाप ने समझाया है तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। जिसमें प्रवेश करता हूँ वह भी अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। यह शिवबाबा बैठ समझाते हैं। (शिव) को बाबा कहा जाता है। कृष्ण को बाबा नहीं, न भगवान कहा जाता है। भगवान है ही निराकार बाप। उनकी महिमा अलग, कृष्ण की महिमा अलग है। ज्ञान का सागर पतित–पावन कृष्ण को नहीं कहा जाता। परमपिता परमात्मा ही ज्ञान का सागर, सुख का सागर, शान्ति का सागर सभी का सागर है। यह महिमा बेहद के बाप की ही है। हद के माँ–बाप, बच्चे आदि सभी उनकी महिमा गाते हैं; परन्तु समझते नहीं हैं। यहाँ बेसमझों को बेहद के बाप से बेहद की समझ मिलती है। मिली थी तब तो यह ल.ना. बने। फिर 84 जन्म ले बेसमझ तमोप्रधान बने (हैं)। फिर (अब) बाप आए हैं सतोप्रधान बनाने। बाप बैठ पढ़ाते हैं यह है परमपिता परमात्मा की यूनिवर्सिटी, जिससे तुम मनुष्य से देवता बनते हो। ग्रंथ में भी महिमा गाई हुई है ना। नानक को गुरु कहते हैं; परन्तु बाप (ने) समझाया है, सिवाय एक सद्गुरु के गुरु कोई होता ही नहीं। भक्ति मार्ग के अनेकानेक गुरु हैं। तुमको मालूम है। (आज) गुरु तुम किसको करते हो, जो (स्त्री) और बच्चों को विधवा और निर्धण का बनाते हैं। आरफन बनाते हैं। वह कौन हैं? सन्यासी। वह घर–बार छोड़ते हैं तो स्त्री विधवा बन पड़ती, बाप के सिवाय बच्चे निर्धण के (हो) पड़ते। इस समय सभी है विधवाएँ, निर्धण के। फॉलोवर्स भी वास्तव में कोई है नहीं। यह झूठ बोलते हैं कि (हम फलाने) के फॉलोवर हैं। खुद भी सन्यास धारण करें तो फॉलोवर कहे जाएं। वह सन्यासी और वह गृहस्थी ट(ट्)टू। ..... पतित लोग पवित्र को फॉलो करें यह कैसे हो सकता। वह पावन तुम पतित, फिर फॉलोवर कैसे ठहरे। पवित्र बनो (तब) फॉलोवर कहो; परन्तु पैसे के भूखे सच्च तो जानते ही नहीं। सच्च कहने वाला है एक बाप। बाप ही आकर (समझाते), सत्य बताते हैं। सत्य ना. की कथा सुनते हैं। क्या वह सच्ची है? तुम नारायण बनते हो? बिल्कुल नहीं। यहाँ (तुम तो) आए हो यह (ल.ना.) बनने लिए। भक्ति मार्ग में तुम सभी झूठी कथाएँ सुनते आए हो। शंकर ने पार्वती को अमर कथा सुनाई; परन्तु वह तो सूक्ष्मवतन में है, यहाँ कहाँ से आए। यह भी झूठ है ना। कलयुग को कहा ही जाता है नर्क। सतयुग है स्वर्ग़। त्रेता को भी स्वर्ग़ नहीं कहेंगे। उनको फिर सेमी कहा जाता है। अधूरा। क्योंकि (वो दुनियाँ) पुरानी हो गई। आत्मा जो पवित्र होती है वही अपवित्र बन जाती है। यहाँ वास्तव में आते ही हैं बच्चे। जो इस ज्ञान को समझ सकते हैं। बाहर वाला समझ न सके; क्योंकि यह है नई बात। गीता का ही एपीसोड है, जबकि पुरानी दुनियाँ बदल नई दुनियाँ होती है। स्वर्ग़ अक्षर कहने से ही मुख पानी हो जाता है। आजकल मरते हैं तो कहते हैं, फलाना स्वर्ग़ पधारा। तो क्या नर्क में था? परन्तु इतना भी अक़्ल नहीं है; इसलिए कहा जाता है पत्थर बुद्धि। यह है काँटों का जंगल। एक दो को काँटा मारते रहते हैं। काम–कटारी चलाते रहते हैं। (जबसे) रावण राज्य शुरू हुआ है तो एक दो पर काम कटारी चलाते आए हैं। अभी बाप कहते (हैं), काम महाशत्रु है। यह रावण सभी का दुश्मन है। तब तो जलाते हैं ना; परन्तु मनुष्यों को पता थोड़े ही है। बिल्कुल पत्थर बुद्धि हैं। बड़े–2 प्राइम मिनिस्टर आदि भी रावण को जलाते हैं। पता कुछ भी नहीं है कि यह कौन है। आसुरी गवर्मेन्ट है ना। दैवी गवर्मेन्ट होती है सतयुग में। आसुरी गवर्मेन्ट होती है कलयुग में। यह (ल.ना.) स्वर्ग़ के गवर्मेन्ट देखो कितने ऊँच हैं। कितनी उन्हों की महिमा है। विलायत वाले भी कहते हैं, लाड कृष्ण। गॉडेस राधे। परन्तु भारतवासियों को कुछ भी पता नहीं है। भारतवासी ही भूले हुए हैं। यह भी नहीं जानते ऊँच ते ऊँच भगवान तो होता है निराकार। कृष्ण को हम कैसे सकते। कृष्ण तो दैवी गुणों वाला मनुष्य है, जो 84 जन्म लेते–2 आसुरी गुणों वाला बनते हैं। यह बातें तुम बच्चे अभी समझते हो। फिर तुम स्वर्ग़ में चले जाते हो। तो यह ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है। वहाँ इन शास्त्रों आदि की भी दरकार नहीं। अभी तुम बेहद के बा(प) से बेहद का वर्सा लेते हो। शिव जयन्ती भी मनाते हैं; परन्तु एक भी मनुष्य नहीं जिसको पता हो कि शिवबाबा कब आए, क्या आकर किया, स्वर्ग़–नर्क किसको कहा जाता है। इनको कहा जाता है, वैश्यालय। विषय सागर में गोते खाते रहते हैं। स्वर्ग़ सतयुग को, नर्क कलयुग को कहा जाता है। नर्कवासी कलयुगवासी ठहरे। स्वर्गवासी

सतयुगवासी। यह निर्विकारी है ना। इन्हों की महिमा गाते हैं। सम्पूर्ण निर्विकारी। यह किसने कहा? सम्पूर्ण विकारी। अपन को कहते हैं सम्पूर्ण विकारी हैं, आप सम्पूर्ण निर्विकारी हो। दुनियाँ बदलती है ना। सम्पूर्ण निर्विकारी सतयुग, सम्पूर्ण विकारी हैं कलयुग में। इसमें फिर 84 जन्म लेनी पड़ती है। मनुष्य फिर कह देते 84 लाख। बाप कहते हैं, 4 लाख जन्म मनुष्य लेते नहीं हैं। भगवान खुद कहते हैं मेरी कितनी ग्लानी कर दी है। मुझे कह देते सर्वव्यापी। कण–कण, भित्तर–ठिक्कर में है। बेहद का बाप जो विश्व का मालिक बनाते है, वह राजयोग सिखाते हैं उनको सब(से) जास्ती अनगिनत जन्मों में डाल दिया है। बाप कहते हैं जब भारत में जब ऐसी पत्थर बुद्धि नर्कवासी वैश्यालय मनुष्य बन जाते हैं। ठिक्कर–भित्तर, कण–कण में भगवान कह देते, कितनी ग्लानी करते हैं। पहले कहते 24 अवतार। फिर कहते युगे–2 आते हैं फिर कहते वह तो सर्वव्यापी है। मनुष्य में भी फिर कह देते कुत्ते–बिल्ले में हैं। ..... मनुष्यों की (क्या) गति हो गई है। अभी बाप आकर सभी की गति–सद्गति करते हैं। सतयुग में सभी की सद्गति (हो)ती है। उसमें सिर्फ़ तुम थोड़े रहते हो। अभी तो अनेक धर्म हैं।

त्रिमूर्ति भी है; परन्तु उनसे शिव को उड़ाए बाकी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को रख दिया है। लिखा हुआ भी है हम ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना; परन्तु करन–करावनहार का नाम ही गुम (क)र दिया है। गवर्मेन्ट का भी होना चाहिए त्रिमूर्ति; परन्तु त्रिमूर्ति कौन है यह किसको भी पता नहीं है। क्या स्थापना करते हैं, भारत को स्वर्ग़ बनाते हैं। अकेला थोड़े ही होगा। तुम सभी ब्रह्मा कुमार–कुमारियाँ हो ना। न द्वारा स्वर्ग़ की स्थापना होती है। बाप सभी को कहते हैं काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से जगत(जी)त बनेंगे। तुम बच्चे आते ही हो बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेने। 21 जन्म सुख पाते हो। फिर रामराज्य सीढ़ी नीचे ही उतरते हैं। रावण राज्य में सभी विषय सागर में गोता खाते हैं। शिवालय में कोई भी गोता (न)हीं खाते। तुम बच्चे अभी समझ गए हो। बाप को कहा जाता है नॉलेजफुल, ज्ञान का सागर, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप। वृक्षपति। वृक्षपति को मनुष्य बृहस्पत कह देते हैं। बृहस्पत की दशा बैठती है ना। अभी तुम पर बृहस्पत (की) दशा है। तुम स्वर्ग़ के मालिक बनते हो फिर रावण आते हैं तो राहू की दशा बैठ जाती है। आधा कल्प वृक्षपत की दशा। आधा कल्प होती है रावण राहू की दशा। वैश्यालय बन जाता है। बाप शिवालय बनाते (हैं।) वैश्यालय रावण बनाती(ा) है। इन सभी बातों को मनुष्य नहीं जानते। वह है ही शूद्र सम्प्रदाय। (तु)म हो ब्राह्मण सम्प्रदाय। ब्राह्मणों की चोटी होती है ना। तुमको भगवान पढ़ाते हैं देवी–देवता बनाने (ि)लए। वर्ण भी है ना। 84 जन्म ऐसे होते हैं। ब्राह्मण वर्ण को कोई चित्र में दिखाते नहीं हैं। चोटी के ऊपर है शिवबाबा। उनको भी दिखाते नहीं हैं। मूर्ख हैं ना। गीता पढ़ते हैं शुरू में ही है कृष्ण भगवानुवाचः। बाप (क)हते हैं बिल्कुल रॉंग है। राइट है शिव भगवानुवाच। कहाँ शिव कहाँ कृष्ण। शिव की तो अथाह महिमा है। (ज्ञा)न का सागर है, सुख का सागर है जिससे वर्सा मिलता है। यह है सर्व गुण सम्पन्न.....सम्पूर्ण निर्विकारी मर्यादा (पुरु)षोत्तम अहिंसा परमो देवी–देवता धर्म। अहिंसा अर्थात् काम–कटारी नहीं चलाते। बुलाते ही हैं, हे! पतित–पावन (आ)ओ। हमको आकर पावन दुनियाँ का मालिक बनाओ। तो कृष्ण थोड़े ही पतित पावन हो सकता। पतित–पावन ही एक बाप। बाबा ने यह भी समझाया है, बाप होते ही हैं दो। एक लौकिक दूसरा पारलौकिक। आदि सनातन तो (दे)वी–देवता राज्य करते थे अभी तो प्रजा का प्रजा पर राज्य। यह है अनलॉफुल राज्य। इनको सावरन्टी (न)हीं कहेंगे। उन्हों को यह पता नहीं है सावरन्टी किसको कहा जाता है। गोया कुछ नहीं जानते। कहते रहते हैं भ्रष्टाचारी दुनियाँ है। अच्छा, इसको अभी श्रेष्टाचारी कौन बनावे? या कहते हैं शान्ति चाहिए। विश्व के शान्ति ..... विश्व इस दुनियाँ को कहा जाता है। जहाँ तुम रहते हो। शान्तिधाम को थोड़े ही विश्व कहेंगे। वहाँ से तुम आते (हो) यहाँ पार्ट बजाने। विश्व में शान्ति थी जब कि इनका राज्य था। विश्व में शान्ति स्थापन करना कोई मनुष्य (का) काम नहीं है। यह सभी को पीस प्राइज़ देते रहते हैं। बाबा कहते हैं तुम विश्व में शान्ति स्थापन करते हो।

तो तुमको प्राइज़ मिलती है, विश्व की बादशाही। वहाँ पवित्रता, सुख, शान्ति भी है। सतयुग को कहा जाता है सुखधाम। जहाँ से आत्माएँ आती हैं वह है निर्वाणधाम और यह है दुःखधाम। घर–2 में मनुष्य दुःखी होते हैं। हेल्थ मिनिस्टर, एड्युकेशन मिनिस्टर फलाना मिनिस्टर कितने ढेर हैं। यह क्या करेंगे। बाप तो तुमको 21 जन्मों लिए एवर हेल्दी बनाते हैं। वहाँ विकार होता ही नहीं। सम्पूर्ण निर्विकारी दुनियाँ कहा जाता है। यहाँ है सम्पूर्ण विकारी। सो भी बहुत विकारी बातें कृष्ण पर जाकर डाली हैं 16,108 रानियाँ थी। यह तो उनको विकारी बना दिया। इतनी रानियाँ फिर कहाँ से लाई। कुछ भी पता नहीं। वह तो छोटा बच्चा वह फिर ज्ञान का सागर हो कैसे हो सकता। बाप समझाते हैं, तुम ही पारस बुद्धि थे फिर तुम ही पत्थर बुद्धि बने हो। स्वर्ग़वासी–नर्कवासी कैसे बनते हैं, विश्व का मालिक कैसे बनते हो फिर बेगर कैसे बनते हो यह तुम्हारी बुद्धि में है। भारत कितना धनवान था। सोमनाथ का मन्दिर भक्ति मार्ग में बनाया है। मन्दिर तो ढेर थी; परन्तु कैपिटल पर ही चढ़ाई की। कितने माल ले गए। अभी तो कंगाल (ब)न पड़े हैं। भीख मांगते रहते हैं। यह भी ड्रामा बना हुआ है। तुम विश्व के मालिक बनते हो। फिर सॉलवेन्ट इनसॉलवेन्ट भी भारत ही बनती(ा) है। पूज्य सो पुजारी। बाप कहते हैं, मैं तो सदैव ही पूज्य हूँ। मुझे जन्म–मरण में क्यों ले जाते हो। देह का अहंकार कितना है। हमको यह महल है, मोटरें हैं हम बहुत ही साहूकार हैं। बाप कहते हैं, यहाँ तो साहूकार हैं वह फिर स्वर्ग़ में ग़रीब बनेंगे। मैं हूँ ग़रीब निवाज़। साहूकार लोगों के लिए यहाँ स्वर्ग़ है। बाप कहते हैं तुम अपने स्वर्ग़ में सुखी रहो। में आकर ग़रीबों की सेवा करता हूँ। मुझे बुलाते भी हैं हम पतितों को आकर पावन बनाओ। अभी मैं ज़रूर किसके तन में आऊँगा। ज़रूर रथ चाहिए मनुष्य का। बाकी घोड़(ड़े) वा बैल का थोड़े ही रथ लेंगे। मैं आ(ता) ही उनमें हूँ जिसका बहुत जन्मों के अंत का जन्म है। उनमें प्रवेश कर यह नॉलेज देता हूँ। जिससे तुम विश्व के मालिक बन जाते हो। ज्ञान खलास हो जाता। फिर गीता कहाँ से आई। यह फिर मनुष्यों ने बैठ बनाई है। पहले नम्बर में भूल है यह। पाण्डवों–कौरवों की लड़ाई है नहीं। यह तो है यूनिवर्सिटी। भगवानुवाचः मैं तुमको ऐसा बनाता हूँ। इनको कहा ही जाता है गीता पाठशाला। क्या बनने का है? यह (ल.ना.) ज्ञानसागर पतित–पावन बाप तुमको पढ़ाते हैं। राजयोग सिखलाते हैं। यह राजाई स्थापन होती है। तुम ब्राह्मणों द्वारा आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना होती है। यह पुरानी दुनियाँ के अनेक धर्म सभी विनाश होने हैं। एक धर्म की स्थापना हो जावेगी। एक धर्म था, जिसको 5000 वर्ष हुए फिर वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी रिपीट होगी। बाकी सभी शान्तिधाम में चले जावेंगे। वह है स्वीट सायलेंस होम। मूल बात बाप बच्चों को कहते हैं, हे! बच्चों अपन को आत्मा समझो। देह के धर्म छोड़ मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म सभी भस्म हो जावेंगे। उनको योग अग्नि कहा जाता है। योग से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम फिर सतोप्रधान बन जावेंगे। वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी ऐसे रिपीट होती है। तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम बच्चे जानते हो हम श्रीमत पर आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। बाप कहते हैं, देह के सभी धर्म छोड़ मामेकं याद करो। विनाश सामने खड़ा है। मरना तो सभी को है। सभी की वानप्रस्थ अवस्था है। तो तुम बच्चों को रास्ता बताना चाहिए। वह तो यह भी नहीं जानते निर्वाणधाम वानप्रस्थ किसको कहा जाता है। पत्थर बुद्धि है ना। अभी तुम सभी को जानकर पारस बुद्धि बनते हो। पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि, पारस बुद्धि से पत्थर बुद्धि कैसे बनते हो सो बाप बैठ समझाते हैं। अच्छा मीठे–2 रूहानी सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद–प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

मनमनाभव